उत्तर प्रदेश में जिलाधीश का अध्ययन
जिला बुलन्दशहर के संदर्भ में

(मेरठ विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबंध)

द्वारा :

नरेन्द्र कुमार

निर्देशक :

डा० एन० विद्यार्थी

एम. ए., डी. एफ. ए. एण्ड डो., पो-एच. डी.

रीडर एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग,

एस० एस० वी० पोस्टग्रेजुऐट कालेज,

हापुड़

1974

मेरठ विश्वविद्यालय,

मेरठ

Acc No 7343
Dt 15.5.75.
TN80
C05c585
CC7

-:: समर्पित ::-

स्वर्गीय माता जी को

प्रस्तावना

जिलाधीश के विषय में भारत तथा विदेशों में बहुत कम शोध कार्य हुआ है । यदा कदा पत्रिकाओं में लेख इत्यादि प्रकाशित होते रहते हैं । जिला प्रशासन के विषय में दो अधिकारिक पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनमें एक श्री एस० एस० खेड़ा तथा दूसरी श्री के०एन० वी० शास्त्री की है । इन पुस्तकों में भी मोटे रूप से जिला प्रशासन के गठन का वर्णन है । विद्वान लेखकों ने जिला प्रशासन के सामान्य स्वरूप का परिचय दिया है ।

अमरीका के एक शोधार्थी श्री फ्रेन्क जे० टेसन ने 1965 में, मैट्रोपोलिटन कलकत्ता के जिला प्रशासन पर अपनी शोध रपट, प्रकाशित करायी थी । इस शोध में बहुत ही संक्षिप्त वर्णन है, इसके साथ साथ कई विषय अछूते छोड़ दिये गये हैं, चूंकि इसकी अपनी कुछ सीमायें थी ।

केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के शोधार्थी श्री टाब पी० रिचर्ड ने 1969 में भुवनेश्वर पर अपना शोध प्रकाशित कराया था । इसमें केवल प्रशासन पर पड़ने वाले विभिन्न दबावों का परिचय दिया गया है ।

अब तक जितनी भी सामग्री प्रकाशित हुई है उसकी अपनी कुछ सीमायें रही हैं । इसी से उत्प्रेरित होकर मैंने अपने शोध का विषय 'जिलाधीश' चुना । मेरा विचार था कि जिला प्रशासन तथा जिलाधीश के अध्ययन में जिला बुलन्द शहर को आधार मान कर, विषय सम्बन्धित बारीक से बारीक बात को उजागर किया जाय, ताकि जिलाधीश तथा जिला प्रशासन का एक साफ चित्र सामने आ सके । अपने मन्तव्य के विषय में मैंने डा० परमात्मा शरण, डा० एस०सी० भरतारिया तथा डा० एन० विद्यार्थी से परामर्श किया जिन्होंने मुझे उत्साहित किया ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अब तक जिला या जनपद के विषय में जो खोज हुई है उनका वर्णन मनु से प्रारम्भ किया गया है । मेरी आरम्भ से ही यह उत्कण्ठा थी कि मनु से पूर्व भी अध्ययन किया जाय । अतः मैंने वेदों तथा पुराणों का इस आशय से अध्ययन किया तथा वैदिक काल में जनपदों का जो स्वरूप रहा है उसके वर्णन से अपने शोध प्रबंध का प्रारम्भ किया है ।

भाग एक में जिलाधीश के पद की उत्पत्ति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ब्रिटिश काल में उसकी स्थिति, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्थिति तथा उसके पद के महत्व का विवेचन किया गया है ।

भाग दो में देश के अन्य राज्यों से तुलनात्मक अध्ययन तथा उत्तर प्रदेश तथा बुलन्दशहर में जिलाधीश की क्या स्थिति है, इसका विवेचन किया गया है।

भाग तीन में शोधविधि तथा शोध स्थानादि का वर्णन किया गया है ।

भाग चार में जिला बुलन्दशहर में जिला प्रशासन की रूपरेखा, जिलाधीश के पद का महत्व, उसके राजनीतिक आर्थिक व सामाजिक विकास सम्बन्धी कार्यों का विवेचन तथा अन्य जिलों से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

भाग पांच में जिलाधीश की कार्यपद्धति का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। भाग 6 में उन प्रशासनिक समस्याओं का विवेचन है जो जिलाधीश के विकास सम्बन्धी कार्यों में आती हैं ।

भाग सात में जिलाधीश तथा जनता द्वारा चुने गये व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध का विवेचन है । भाग आठ में जिलाधीश की स्थिति तथा शक्तियों का आलोचनात्मक विश्लेषण है । भाग नौ में सुझाव दिये गये हैं तथा भाग दस में निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं ।

अंत में मैं, उन पुस्तकालयों के पुस्तकालय अध्यक्षों तथा अधिकारियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मुझे अध्ययन की सुविधा प्रदान की । इनमें आई०ए०एस०टी० पुस्तकालय, देहली, देहली विश्वविद्यालय पुस्तकालय, सप्रू हाउस पुस्तकालय (इन्डियन कौंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स), मेरठ कालेज, मेरठ पुस्तकालय, एन०आर०ई०सी० कालेज खुर्जा पुस्तकालय, में अध्ययन सम्बन्धी विशेष सुविधा मुझे मिली । इसके अतिरिक्त मैं समग्र रूप से उन समस्त जिलाधीशों, जिला प्रशासन के अधिकारियों, कर्मचारियों, नेताओं, अन्य व्यक्तियों, जनता के भिन्न भिन्न वर्गों के लोगों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मुझे साक्षात्कारों में अपना समय दिया, प्रश्नावलियों के उत्तर दिये, तथा शोध के लिये अन्य सहयोग प्रदान किये ।

नरेन्द्र कुमार
(नरेन्द्र कुमार)

2, राय मन्डी,
खुर्जा (उ०प्र०) 203131
दिनांक: 18.7.1974

आभार

उन मित्रों, साथियों, प्रवक्ताओं, अधिकारियों तथा जनता के लोगों को धन्यवाद देने तथा आभार प्रदर्शन के लिये शब्द ढूंढना बहुत कठिन है जिन्होंने मुझे इस शोध कार्य में अपना सहयोग प्रदान किया ।

सर्व प्रथम मैं अपने निर्देशक आदरणीय डा0 एन विद्यार्थी, रीडर एवं विभागाध्यक्ष, एस0एस0वी0 पोस्टग्रेजुएट कालेज हापुड़ का आभारी हूँ जिन्होंने अपने व्यस्त समय में से, इस शोध अवधि में अपना बहुत सा समय प्रदान करके, विद्वतापूर्ण निर्देशन दिया ।

प्रो0 ए0 के0 गुप्ता व प्रो0 प्रेम पाल सिंह(राजनीति विज्ञान विभाग एन0 आर0 ई0 सी0 कालेज खुर्जा) का मैं आभारी हूँ जिन्होंने मेरे शोध के प्रारूप, विधि तथा तकनीक पर अपनी आलोचना दी तथा सुझाव दिये ।

मैं उन लेखकों, विद्वानों तथा समाज वैज्ञानिकों का भी आभारी हूँ जिनके ग्रंथों के अध्ययन से मैंने अपने **शोध** कार्य में सहायता ली ।

श्री ए0के0दास जिलाधीश,बुलन्दशहर व श्री राधे कृष्ण मिश्रा आरक्षी अधीक्षक,बुलन्दशहर का मैं अति आभारी हूँ जिन्होंने अपने अति व्यस्त समय में कई बार भेंट वार्ता हेतु समय प्रदान किया व जिला प्रशासन के अन्य अधिकारियों का सहयोग दिलाया ।

डा0 चन्द्र प्रकाश शर्मा (मनोविज्ञान विभाग,एन0 आर0 ई0सी0 कालेज खुर्जा व प्रो0 वासुदेव प्रसाद गुप्ता (गणित विभाग, एन0 आर0ई0सी0 कालेज,खुर्जा) का मैं अति आभारी हूँ जिन्होंने प्रश्नावलियों के विश्लेषण, गणनामान, तथा सांख्यिकीय गणनाओं में, कठिन परिश्रम करके अपना सहयोग दिया ।

श्री गुलशन राय मेहता (आई0 आई0 टी0 देहली) को, मैं उनके आई0 आई0 टी0-देहली पुस्तकालय तथा देहली विश्वविद्यालय पुस्तकालय में अध्ययन की सुविधा प्रदान कराने के लिये धन्यवाद देता हूँ जहाँ मुझे प्रचुर रूप में विषय सामग्री उपलब्ध हुई ।

श्री सी0एल0गुप्ता, प्रो0 मैसर्स सन्दीप कामर्शियल कालेज, मेरठ को

मैं धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अशुद्धियों रहित टाईप करके इसे यह स्वच्छ रूप दिया ।

अंत में मैं अपनी बहन श्रीमति कृष्णा कुमारी तथा बहनोई श्री जगदीश राय मेहता व भाई श्री देवेन्द्र कुमार मेहता,श्री पवन कुमार मेहता का आभारी हूं जिनसे मुझे अपनी शोध अवधि के बीच सहयोग, उत्साह तथा प्रेरणा मिलती रही ।

नरेन्द्र कुमार
(नरेन्द्र कुमार)

2, राय चन्दी,
खुरजा (यू०पी०)203131

दिनांक : 18.7.1974

पृष्ठ सूचि

भाग-1	पृ0 1-38
भाग-2	पृ0 39-81
भाग-3	पृ0 82-37
भाग-4	पृ0 88-111
भाग-5	पृ 112-129
भाग-6	पृ 130-135
भाग-7	पृ 136-143
भाग-8	पृ 144-159
भाग-9	पृ 159-171
परिशिष्ट	पृ0 192 से आगे
	कुल परिशिष्ट: 15
ग्रंथ तथा सहायक ग्रंथ सूचि	पृ0 185-192

....